बंदी समाज में वापस आए तो उसके पुर्नवास की व्यवस्था की जाए- राज्यपाल

18-7-2017

पंचकूला, 18 जुलाई- हरियाणा के राज्यपाल प्रो. कप्तान सिंह सोलंकी ने कहा कि प्रदेश की जेलों में विशेष सुधार के अनेक कार्यक्रम लागू किए गए हैं। राज्य की 19 जेलों में बंद 18000 बन्दियों के जीवन स्तर को सुधारने के लिए बनाई गई नीति को जमीनी स्तर पर लागू करने के लिए जेल अधिकारी आपसी समन्वय के साथ कार्य करें। साथ ही यह भी जरूरी हो जाता है कि जब बंदी समाज में वापस आए तो उसे मुख्य धारा से जोडऩे के लिए पुर्नवास के विकल्प की पहले से ही व्यवस्था की जाए। श्री सोलंकी मंगलवार को यहां अन्तर्राष्ट्रीय स्वतन्त्रता, न्याय एवं प्रजातन्त्र दिवस'' पर आयोजित गोष्ठी में बतौर मुख्य अतिथि अपना संबोधन दे रहे थे। संगोष्ठी का शुभारंभ राज्यपाल एवं जेल एवं परिवहन मंत्री कृष्ण लाल पंवार ने दीप प्रज्जवलित कर किया। उन्होंने कहा कि जैसा कि विदित है कि मानवता की सेवा को आजीवन समर्पित रहे नेता श्री नेल्सन मन्डेला के जन्मदिवस 18 जुलाई को ''अन्तर्राष्ट्रीय स्वतन्त्रता, न्याय एवं प्रजातन्त्र दिवस'' के रूप में मनाया जाता है।

राज्यपाल ने हरियाणा कारागार विभाग एवं आई.सी.ए. चण्डीगढ़ को बधाई देते हुए कह कि वे इस बात के लिए प्रशंसा के पात्र हैं कि इस वर्ष इस दिन को मनाने के लिए इस गोष्ठी का आयोजन किया है। उन्हें इस बात की भी आज बेहद खुशी है कि ऐसे महान् व्यक्तिव के जन्म दिवस पर आयोजित इस संगोष्ठी में आने का मुझे अवसर मिला।

श्री सोलंकी ने कहा कि मानवीय संवेदनाओं का कोई मूल्य नहीं होता। सरकार की भी कोशिश रहनी चाहिए कि जेलो में बंद कैदियों के साथ संवेदना रखते हुए अधिकतम सुविधाएं एवं उचित वातावरण उपलब्ध करवाया जाए। उन्होंने समाज से भी आहवान किया कि जब कोई व्यक्ति अपनी सजा पूरी करने के बाद समाज में आता है तो उसे सम्मान की दृष्टि से देखते हुए हतोत्साहित करने की बजाए अच्छे कार्य करते हुए सामान्य जीवन जीने के लिए प्रेरित करें। उन्होंने जेलों में हो रहे सुधारात्मक उपायों पर विभाग के मुखिया डॉ. के.पी. सिंह व उनकी टीम की सराहना करते हुए कहा कि यहां इस बात का भी उल्लेख करना जरूरी है कि हरियाणा के कम्प्यूटराईजेशन कार्यक्रमों की चारों ओर सराहना होती है। हरियाणा की जेलों में ओवर क्राउडिंग नहीं है। बन्दियों के लिए दो चुने हुए टेलिफोन नम्बरों पर बात करने के लिए पीआईसीएस मशीन स्थापित की गई है। कारागार की कैन्टीनों को कैशलेस बनाया गया है। किसी भी व्यक्ति के मानसिक विकास में शिक्षा का बड़ा योगदान होता है। इसी सोच के साथ प्रदेश की जेलों में बन्दियों को नियमित रूप से इग्नू तथा एनआईओएस के माध्यम से शिक्षा दी जाती है एवं

आईटीआई/आरसेटी के माध्यम से व्यावसायिक कोर्स करवाये जाते हैं। कारागारों में योग, प्रार्थना व खेलकूद करवाये जाते हैं। कारागारों में स्वच्छ व प्रदूषण-रहित, हरा-भरा वातावरण उपलब्ध है। मुलाकात के लिए इंटर-कॉम लगे आधुनिक कक्ष बनाये गए हैं। बन्दी पंचायत के माध्यम से बन्दियों की समस्याएं सुनी जाती हैं और उनका समाधान किया जाता है।